स्वामी विवेकानंद और शिक्षा

डॉ. वसुधा वि. देव
सहयोगी प्राध्यापक,
शासकीय अध्यापक महाविद्यालय, अकोला
(www.chinmayasanskar.com)

स्वामी विवेकानंद और शिक्षा

डॉ. वसुधा वि. देव
सहयोगी प्राध्यापक,
शासकीय अध्यापक महाविद्यालय,
अकोला

आज मानव के जीवन में अविरत संघर्ष है। तंत्रज्ञान से विज्ञान से मानव का जीवन तो सरल हुवा पर वह मानव्य से बहुत दूर जाता हुवा नजर आता है। हमारी सांस्कृती के विरोध में रहना यह आज फॅशन स्वरूप समझा जा रहा है। मानव ज्ञान संस्कृती, धर्म से दूर होता चला जा रहा है। शिक्षा से मानव की निर्मिती नही हो रही है। मानवीय गुणों का संवर्धन शिक्षा के माध्यम से नही हो रहा है। अगर हम शिक्षा के माध्यम से मनुष्य में मानवीय गुणोकी समृध्दी को देखना चाहते है तो हमे प.पू. स्वामी विवेकानंद के Man making education का पुनर्जागरण करना होगा। स्वामीजी द्रष्टा थे। शायद उन्हे पता था जब भी Information explosion होगा तब मानव, मानव नही रहेगा. मानव के रू‍प मे पशु बनेगा। अतः उन्होने मानवीय दृष्टीकोन को सामने रखते हुए Man making education की योजना बनाई।

संपूर्ण जग परिभ्रमण करते हुवे उन्होने महसूस किया की भारत अपनी आत्मा को खो बैठा है भारत की आत्मा है उसका अध्यात्म। भारत के बहिरंग से हम भारत वर्ष की कल्पना नही कर सकते अगर हमे भारत को खोजना है तो भारत का अध्यात्म को पुनरूज्जीवीत करना होगा। क्योकी यह आत्मा भारतकी इतिहास मे है नही भारत के बहिरंग मे नही। भारत का अध्यात्म तभी पुनरूज्जीवीत होगा जब भारत की जनता की इसकी शिक्षा प्राप्त होगी। हमारी शिक्षा मे काफी दोष है. इसमे महत्वपूर्ण दोष यह है की हमारी शिक्षा यह भारतीय अस्मिता को नष्ट करनेवाली शिक्षा है्। इससे बाहय विकास जरूर होगा पण भारत के अंतरंग का विकास इससे नही हो सकता।

यह शिक्षा भारत के स्वभावानुरूप नही है अतः यह भारतीय नागरिको का निर्माण नही करती। मानवो मे मुल्योंका निर्माण नही कर रही है। यह शिक्षा मानव को अधःपतीत कर रही है। यह शिक्षा अभावात्मक है। यह शिक्षा हमे भारतीय अध्यात्म धर्म, संस्कृती, मूल्य, स्वधर्म की परिभाषा नही सिखाती. इसलिये हमे अगर मानव निर्माण करना है तो मानवीय गुणो की शिक्षा आवश्यक है। अतः स्वामिजीने शिक्षा की परिभाषा को बताया – यह परिभाषा ये निम्न लिखित है.

1) Education is not collection of knowledge but acquiring knowledge for Harmonious Development

2) You can not teach child any more than you can grow a plant. The plant developes it own nature. The child also itself. But you can help it to go gorward in its own way.

3) The end of all education, all training should be man making. The end and aim of all training is to make the man grow.

4) Education is the manifestation of perfection already present in man.

उपरोक्त सभी परिभाषासे शिक्षा का अर्थ मानव की अंतर्निहित शक्तीकी अभिव्यक्ती है। मानव जो ज्ञान प्राप्त करता है व ज्ञान उसीमे विद्यमान है सिर्फ वह अज्ञान के आवरण को दूर करता है। अज्ञान की आवरण की वजहसे ज्ञान का प्रगटीकरण नही हो पाता। अतः जब भी यह अज्ञान का आवरण दूर होता है तब मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है।

मानव की अंतर्निहित शक्ती क्या है ? और उसे अनावृत्त करने से क्या मायने है ? मानव को ज्ञान प्राप्त होता है इसका अर्थ क्या है ? मनुष्य के अंतर्निहित ज्ञान है तो इस ज्ञान तक जाने का रास्ता कौनसा है ? क्या इस रास्ते पर हम सभी मानव चल सकते है ? क्या शिक्षा के माध्यम से हमे इस अंतर्निहित शक्ती का ज्ञान होगा ? शिक्षा के संदर्भ मे यह अत्यंत महत्वपूर्ण सवाल है ? इस प्रश्न का उत्तर स्वामीजी के विचारों मे ही मिलते है.

मानव की अंतर्निहित शक्ती क्या है ? :–

स्वामीजी यह वेदांतिक है। अतः मानव की शक्ती को अध्यात्मिक रूप से देखा जाये तो मानव की पूर्णता यही मानव की अंतर्निहित शक्ती है। मानव का स्वरूप परिपूर्ण है। पर यह स्वरूप से वह अज्ञात है। क्यौ की देह की उपाधी से बंधा हुवा है। वह स्वयं के देह को ही अंतीमतः स्वत्य मान चुका है। इसलीये मानव भौतिक व्यवहार को ही प्राधान्यता दे रहा है। मानव का स्वरूप सत्‌चित्‌ आनंद स्वरूप है। शिवोहम कि जगह आज मानव देहोहम्‌ की रट लगा बैठा है। अर्थात सत्‌ चित्‌ आनंद यह आत्मा का मुलस्वरूप है. इसलीये आत्मतत्व यही मानव का पूर्ण स्वरूप है। आत्मतत्व यह आनंदस्वस्य है. आत्मतत्व को कोई आकार नही, कोई स्वरूप नही। कोई उपाधी नही। परंतु यह सर्वश्रेष्ठ है। यह आहारूप है. यह वेदप्रतिपाद्य है। यह स्वसंवेघ है। इस बात को जब हम जान लेते है तब हममे जो अंतर्निहित शक्ती है उसे हम महसूस करते है। और हमारा जीवन ‘अह’ तथा ‘मम’ को पार करता है। और जैसाकी शंकराचार्य ने आत्मषट्‌कम्‌ में स्वयंकी खोज का मार्गदर्शन कीया है, की मै शरीर नही हू मै मन नही हॅू , मै अहंकार नही हॅू , मै बुध्दी नही, मै गुरू नही, शिष्य नही, माता, पिता, बंधु, भ्राता नही तथा मै भोजन एवं भोक्ता भी नही तो चिदानंद स्पः शिवोहम शिवोहम। यह अनुभूती है और यह अनुभुतीही मानवको निर्भय तथा बलवान एवं शक्तीमान बनाती है। यही मानवकी अंतर्निहित शक्ती का प्रगटन है।

अज्ञान को अनावृत्त करनेका अर्थ क्या है ? :–

इस जगत मे आत्मज्ञान ही अंतीम ज्ञान है। ‘‘मै देह हॅू. मेरा अंतिम स्वरूप दैहिक है’’. यह मानव का निश्चय होना यह उसका अज्ञान है। इस अज्ञान को दूर करना इसका अर्थ है देहबुध्दी को आत्मबुध्दी मे परिवर्तीत करना। यह क्षण जब भी आता है तब मानव को ज्ञान की प्राप्ती होती है. और उसका अंतीमतः यही निश्चय होता है की मै आत्मतत्व हॅू। इसलीये इस जगत की उपाधी से मै परें हॅू। मै मर्त्य नही चेतन हॅू। मै संकुचित नही व्यापक हॅू। मै जड नही चेतन हुॅ। मेरी मृत्यु नही हो सकती। मै जन्ममृत्युके परे हॅू। मेरी अंको मे गिनती नही हो

सकती क्यो की मै वस्तु नही तत्व हुं। इसलीये सभी जगह मै व्याप्त हुॅं। मैही सभी सृष्टीमे अभिव्यक्त हुॅं। मै ही चेतना हुॅं। यह अनुभूतीही ज्ञान है। ठाकुर रामकृष्ण परमहंसजी ने जब स्वामीजीको अनुभूती प्रदान की और Transformation हुवा. नरेंद्र से विवेकानंद यह Transformation यह एक अलौकीक गुरूकी अलौकीक शिष्य को दि हुवी शिक्षा थी। यह Transformation ने संपूर्ण इतिहास को स्वर्णिम बनाया।

मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है इसका अर्थ क्या है ? :–

ज्ञान यह बाहरी संकल्पना नही है। हमारे ऋषी मुनियोंने वेदोका निर्माण किया। क्या वेदोका लेखन पहले हो चुका था ? नही यह अक्षरब्रह्म अखिल सृष्टीमे विद्यमान थे। यह शब्दब्रह्म इस सृष्टीमे विद्यमान थे। हमारे ऋषी केवल इन अक्षरब्रह्म एवंम् शब्दब्रह्म के दृष्ट्रा थे। इन्होने इन अक्षरब्रह्म को देखा जाना पहचाना और जगत के सम्मुख रखा। उसको शब्दबध्द किया और दुसरे पिढीयोमे श्रृती के आधारपर संक्रमित किया। हमारे वेद, उपनिषद तथा प्राचीन वाड्.मय यह हमारे ऋषी मुनियोकी खोज थी। पर यह बाहरी खोज नही थी। यह ज्ञान उनमें विद्यमान था जो उन्होने ऋचा के माध्यमसे शब्दोके आधार से अभिव्यक्त किया। शब्दबध्द किया। न्यूटन ने गुरूत्वाकर्षण को खोजा। क्या उससे पहले कोई भी वस्तु पृथ्वीपर नही गिरती थी ? पर न्युटन ने उसे जान लिया ओर उसे गुरूत्वाकर्षण का नाम दिया। इस जगत मे जितने भी संशोधन हुवे वह सभी संशोधन यह सृष्टीमे विद्यमान ही थे। मानव ने उसे खोज निकाला। परंतु हर एक खोज के लिये कुछ प्रयोगशाला होना आवश्यक है। मानव जब स्वयंको ही प्रयोगशाला समझाता है तो उसमे प्रयोग करने के बाद जो निष्कर्ष प्राप्त होगा उसके लिये वही ज्ञान होगा। बाहरी वस्तुओका जो हम आज के परिभाषा में ज्ञान कहते है वास्तविक वो ज्ञान नहीं वह सिर्फ Information है। हम Information को ज्ञान नही कह सकते।

ज्ञानतक जाने का रास्ता कौनसा है ? :–

मानव देह यह सबसे बडा भंडार है। यह सबसे बडा धन है। मानवेतर प्राणी को देह प्राप्त है पर मनुष्य को मन और बुध्दी की देन है। प्रबोध सुधाकर यह ग्रंथ में आचार्य शंकर ने इस मानव देहके बारेमें निरूपण किया है और इस निरूपण के प्रायः दो आयाम है। 1) देहनिंदा , 2) देह निग्रह। इसका अर्थ है मुझे अगर मनुष्य देह प्राप्त है तो इस देहके माध्यमसे मैने कौन कोनसे कर्म करना चाहिये और कौनकौनसे नही। करना चाहिये इसका विवके वह कर्म हमे नही करना चाहीये जो कर्म निंदनीय है. अर्थात जो कर्म के माध्यम से हम अंतिम लक्ष को प्राप्त नही कर पाते वह कार्य हमे इस देहके माध्यम से नही करना चाहिये और जीवन मे मुझे ऐसे ही कर्माको अपनाना है जीन कर्म से मै अंतिम लक्षतक पहुॅचु।

स्वामीजी इस बात पर बल देते है की सुदृढ शरीर के माध्यमसे ही मनुष्य अपने स्व की पहचान कर सकता है इसलीये व्यक्तीत्व का विकास यह शिक्षा का मुलाधार होना चाहिये। शरीर – मन – बुध्दी को जानना ही अध्यात्म है।

स्व को पहचानने के लिये शरीरका अध्यात्मिक ज्ञान, मन का ज्ञान तथा बुध्दी का ज्ञान होना आवश्यक है. मानव का व्यक्तीत्व दो प्रकार का है

1) स्थुल व्यक्तीत्व
2) सूक्ष्म व्यक्तीत्व

स्थुल व्यक्तीत्व :–

यह मनुष्यका बाहरी व्यक्तीत्व है। यह मानवका शारिरिक व्यक्तिमत्व है। मानवका बाहय शरीर सुदृढ होना चाहिये इसलीये व्यक्ती को अपने शरीर की निगरानी करना यह अति आवश्यक है. Proper Nutrition, proper diet, proper exercise, physical groming यह बात अत्यंत अनिवार्य है। मानसिक स्तर पर मनुष्य को सर्वप्रथम मन की परिभाषा को ज्ञान होना चाहिये। मन एवं मन का कार्य क्या है मनका विकास सं मायने क्या है ? अगर शरीर को proper diet नही मिलता तो deficiencies होती है तो मनको भी proper diet नही मिला तो कौनसी उत्पन्न होगी. बुध्दी की परिभाष क्या है ? बुध्दी का कार्य क्या है ? बुध्दी का स्थान क्या

है ? अगर बुध्दी को भी proper diet नही मिला तो कौनकौनसी समस्या उत्पन्न हो सकती है ? शरीर मन बुध्दी इनका संबंध होना ही व्यक्तीत्व का विकास है। और इस विकासके माध्यम से अध्यात्मिक विकास होना और वैश्विक विकास यह ज्ञान की चरम सिमा है। मानव को शरीर मन बुध्दी एवं चित्त के स्तर पर समान अनुभूती हो यह ज्ञान की चरमसिमा है और यह व्यक्ती का विकास है। अतः व्यक्ती को अगर ज्ञान प्राप्त करना है तो उसे सूक्ष्मतर होना होगा. अर्थात आपने पूर्ण व्यक्तीत्व का ज्ञान प्राप्त करना होगा और इस व्यक्तीत्व के आधार पर स्वयंको खोजना होगा. इसके आधार से अध्यात्म शास्त्र यह शरीर शास्त्र है यह मानस शास्त्र है यह बुध्दीका शास्त्र है यह Interdiscplinary शास्त्र है। विचारधारा को अवगत कराना होगा आजकी शिक्षा में इसका विचार नही हो रहा है। जो शिक्षा का मूलाधार है वही दुर्लक्षित है।

क्या शिक्षा के माध्यम से हम इस अंतर्निहित शक्ती को अभिव्यक्त कर सकते है ?

क्या व्यक्ती अंपनी अंतर्निहित शक्ती को शिक्षा के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकते है ? इसका जवाब हमे स्वामीजी के शिक्षा विषयक उद्देशोमें मिलता है. हमे शिक्षा के उद्देशो को वर्गीकृत करते है तो स्वामीजीका Vision निम्नलिखित है.

स्वामिजी यह वेदांती विचारक थे । इसी कारण मानव मे पाये जाने वाले ईश्वरीय पूर्णता पर उनका अत्याधिक विश्वास था । व्यक्ती के स्वत्व को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है । मनुष्य मे अज्ञान के आवरण के कारण वह अपनी पूर्णता का ज्ञान नही होता. Man is not only aware of his own nature. He is ignorant of his Spiritual Identity with the self which is Sat (truth) Chit (consciousness) and Anand (Bliss) शिक्षा सेही आत्मा पर विश्वास दृढ होता है।

शिक्षा के उद्देश :–

उन्हे शिक्षा के माध्यमसे ऐसे व्यक्तीत्व का निर्माण करना है जो मानव है। Man Making Education पर उन्होंने बल दिया है. अर्थात अगर हमे आज 21 वी

सदी का मानव का निर्माण करना है तो इसके लिये यह मानव मे दो प्रकारकी क्षमता वृध्दींगत होना चाहिये.

1) व्यक्ती यह Knowledge Master होना चाहिये

2) व्यक्ती यह Wisdom Master होना चाहिये

(स्वामीजीने निम्नलिखित शिक्षा के उद्देशो का प्रगटन किया. स्वामीजी वेदांती थे इसीलीये उनके शिक्षा शिक्षा के उद्देशो मे स्वामीजी ने पारमार्थिक रूपसे शिक्षाके उद्देश एवं व्यावहारिक रूपसे शिक्षा के उद्देश बतलाये हे. विषयक उद्देशोपर वेदांत का प्रभाव है.)

1) आंतरिक पूर्णता का बाहय प्रगटीकरण :–

मानव का मुलस्वरूप जो है उससे वह ज्ञात नही है। आज बाहरी शिक्षा मनुष्य ले रहा है पर उसे स्वयंके बारे मे कुछ भी ज्ञात नही। आंतरिक पूर्णता यह मानव का स्वरूप है। यह पूर्ण स्वरूपको अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ती को स्वयं का परिचय होना आवश्यक है। अपने आपको जाननेका तात्पर्य है स्वयं का आत्मतत्व को जानना।

2) मनुष्यत्व का परिपूर्ण विकास **(Development of Humanism Personality)** :–

व्यक्तीको अपने व्यक्तीत्व का ज्ञान नही होता। मनुष्यत्व का तात्पर्य है लौकिक अलौकिक गुणो को धारण करना। अर्थात यह सद्गुण है, self confidence, self faith, self control, self dependence and self concept। अपनी आत्मा पर विश्वास होना ही सद्गुणोका विकास है. शारीरिक, मानसिक, भावनिक एवं बौध्दिक विकास यह व्यक्तीत्व का विकास है।

व्यावहारिक दृष्टीकोनसे शिक्षा के उद्देश :–

1) शारीरिक विकास :–

दुर्बलता से स्वामीजी को नितांत चिढ थी। सामर्थ्य यह जीवन है दुर्बलता यह मृत्यु। दुर्बलता यह पाप है। दुर्बलता का परित्याग यह उपनिषद की भी महान शिक्षा है। व्यायाम योग्याभ्यास से वह मनुष्य को बलिष्ठ बनाना चाहते है।

2) चारित्र्यनिर्मिती :–

चारित्र्यनिर्मिती यह शिक्षा का महान उद्‌देश है। Build up your character and manifest your Nature। **मानव्यका निर्माण ही चारित्र्य निर्माण है। चारित्र्य निर्माण के लिये सद्‌विचार तथा संस्कारोका, पुनःसंस्करण अनिवार्य है। इससेही** Habit formation होगा। Character is repeated habit and repeted habit alone can form character।

3) जिवी को पार्जन का उद्‌देश Vocational aim of Education) :–

भारत यह गरीबो का देश है। अगर लोग भुखे रहेंगे तो वह ज्ञान को प्राप्त नही कर सकते। अतः शिक्षासे आर्थिक लाभ भी होना चाहिये। जब तक मानव भौतिक सुख को प्राप्त नही करता तब तक व स्वयंका अध्यात्मिक विकास नही कर पाता है। न तो मनुष्य किसीका शोषण करे नाही वह किसपर निर्भर हो। यह आत्मनिर्भरता मनुष्य के आध्यात्मिक विकास का कारण होगी। इसलीये कृषी एवं उद्योगाका प्रशिक्षण मिलना अनिवार्य है।

4) विश्वबंधुत्व का विकास (Development of World Brotherhood) :–

यह शिक्षा का अंतिमतः उद्‌देश है. समत्वबुध्दी का विकास करना ही शिक्षा है। स्वामी विवेकानंद भगवद्‌गीता के प्रति समर्पित थे। यह उद्‌देश को पूर्ण करने के लिये उन्होने मानवसेवा पर बल दिया है।

5)मानव एवं समाज की सेवा (Service of Humanity and Society) :–

मानव को अध्यात्मिक गुणोकी प्राप्ती तभी होगी जब उनमे सेवाभाव वृध्दींगत होगा। इस अभ्यास से सभी प्राणी ब्रह्ममय है ब्रह्मस्वरूप है यह भाव वृध्दींगत होगा। शिक्षा से व्यक्तीमें सामाजिक भाव निर्माण होना चाहिये। समाजसेवा यह शिक्षा का प्रमुख उद्‌देश है। मनुष्य में ही ईश्वर समाया हुवा है। और इसलीये मानव सेवाही ईश्वरसेवा है। यह भाव सिर्फ मानवतक ही सिमित नही परंतु मानवेतर प्राणी एवं चराचर सृष्टी में इसका विकास है। चराचर सृष्टीसे जो चैतन्य अभिव्यक्त हो रहा है वह ईश्वर रूप है। यही भाव शिक्षा के माध्यमसे दृढ होना चाहिये। मानव सेवा तथा भूतदया ही ईश्वर सेवा है यह भाव शिक्षा से विकसित होना यही मानव निर्माण है।

6) स्वाभाविक विकास :–

शिक्षा के माध्यमसे व्यक्तीका स्वाभाविक विकास अनिवार्य है। जिस तरह छोटे पौधे का विकास कितना होना चाहिये यह बात को हम तय नही कर सकते ठिक उसी प्रकार बालक का विकास भी स्वाभाविक ही होना चाहिये। हमारा कर्तव्य है उसके स्वाभाविक विकास को संधी प्रदान करना। उसके विकास के मार्ग में जो भी रूकावटे आती है उसे हमें दूर करना चाहिये। बालक में सिखने की शक्ती है इसलीये वह सीख रहा है। ज्ञान उसमे निहित है. उसके ज्ञानेंद्रिया एवं कर्मेद्रीयोकी उपयोग करने की बुध्दीको विकसित करना ही शिक्षा है। स्वामीजी कहते है बच्चो का स्वाभाविक विकास ही शिक्षा है।

7) भावात्मक विकास :–

आज बालको में नकारात्मक विचार जादा उत्पन्न हो रहे है। अभावात्मक विचार मानव को दुर्बल बनाता है। जो भी भावात्मक अथवा सकारात्मक है उसपर ही शिक्षा में बल देना चाहिये। बालकों को गलतियों का बार बार आभास कराने से वह नकारात्मक बन सकता है इसलीये उसने उसने जो गलतिया कि है उस गलतियों को किस प्रकार सुधारना चाहिये इसका सकारात्मक विचार शिक्षा से मिलना चाहिये। ज्ञान कि दृष्टी से वह जहॉ है वहॉ से उसे उपर उठाना होगा. इस बात को शिक्षा मे लाना चाहिये।

शिक्षा का सही अर्थ अगर माहिती संकलन यही रहता तो ग्रंथ संग्रहालय यह विश्व के महान साधु बनते और ज्ञानकोष यह ऋषी। विश्वविद्यालय की डिग्रीयों से हम शिक्षीत नही होते जिन डिग्रीयों मे पाश्चात्य विचारधाराको अपनाया हो। शिक्षासे कारकुन एवं वकील निर्माण होना यह शिक्षा का कदापी उद्देश नही हो सकता। इस ध्येय से व्यक्ती को राष्ट्रको कोई फायदा नही होता है। शिक्षा से मानव को जीवनसंग्राम में लडने का सामर्थ्य निमार्ण होना चाहिये जो शिक्षा मानव मे चारित्र्य बल नही निर्माण करती वह सच्ची शिक्ष नही है।

इसके अतिरिक्त स्वामीजी की दृष्टीकोनसे निम्नलिखित भी शिक्षाके उद्देश है.

1) सद्विचारोकी निर्मिती
2) समत्वबुध्दी का निर्माण
3) सतकृत्यकी प्रेरणा को जागृत करना

4) मानसिक एवं अध्यात्मिक क्रमविकास

5) भूतदयाको निर्माण करना

6) व्यक्तीमे साहस का निर्माण करना

7) व्यक्तीमन मे श्रध्दा उत्पन्न करना

8) एकाग्रता को साध्य करना

9) मनपर प्रभुत्व को प्राप्त करना

उपरोक्त विवेचन से यही निष्कर्ष निकलता है की स्वामीजी ने शिक्षके उद्देशोको समन्वयवादी रूपसे प्रस्तुत किया है।

पाठयक्रम :–

उपरोक्त उद्देशेको अभिव्यक्त करनेवाला पाठयक्रम स्वामीजीने बतलाया है जिससे व्यवहार्यता एवं अध्यात्मिकता का संगम है. यह पाठयक्रम निम्नलिखित है.

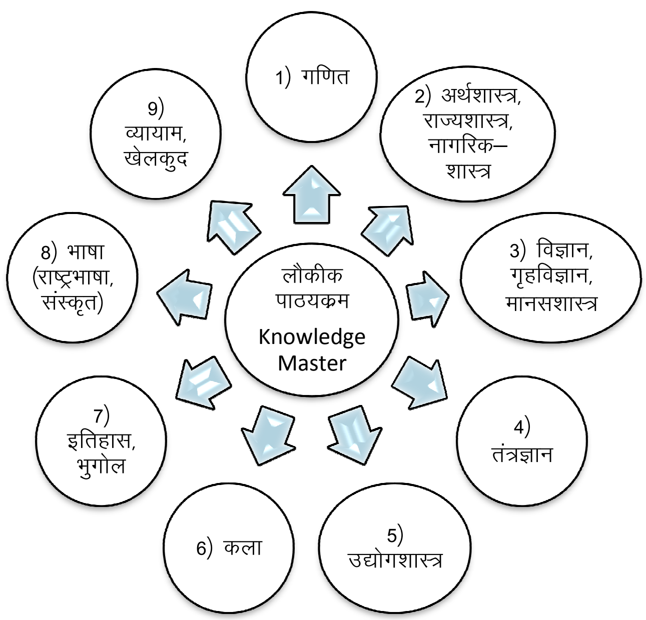

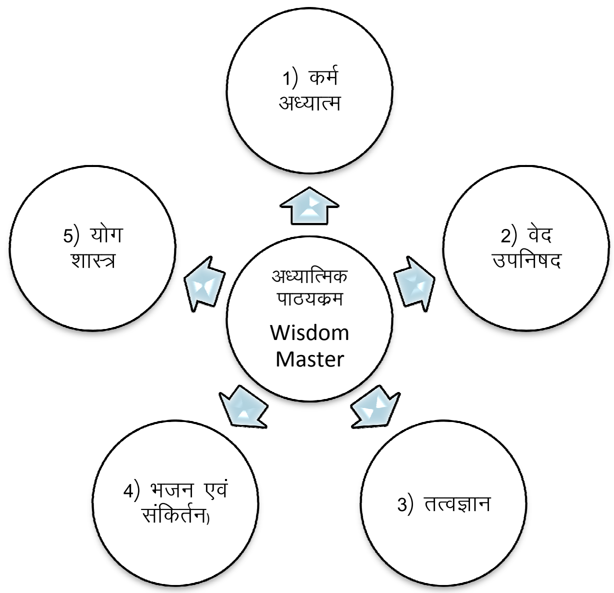

शिक्षाविधी :–

ज्ञान साधना की विधी को हम शिक्षाविधी कहते है। स्वामीजीने इस विषय मे सिर्फ एकाग्रता पर बल दिया है। किसी भी ज्ञान शास्त्र का अभ्यास सिर्फ एकाग्रतासे होता है। जितनी अच्छी एकाग्रता उतना ही अच्छा अभ्यास एवं ज्ञानसाधना प्रभावी होती है। एकाग्रता यह मन की शक्ती है। मन की शक्तीपर स्वामीजीने बल दिया है। यह शिक्षा का स्तर है यह शिक्षाविधी का मूलाधार है। स्वामीजीने निम्नलिखित शिक्षा विधीयों पर बल दिया है।

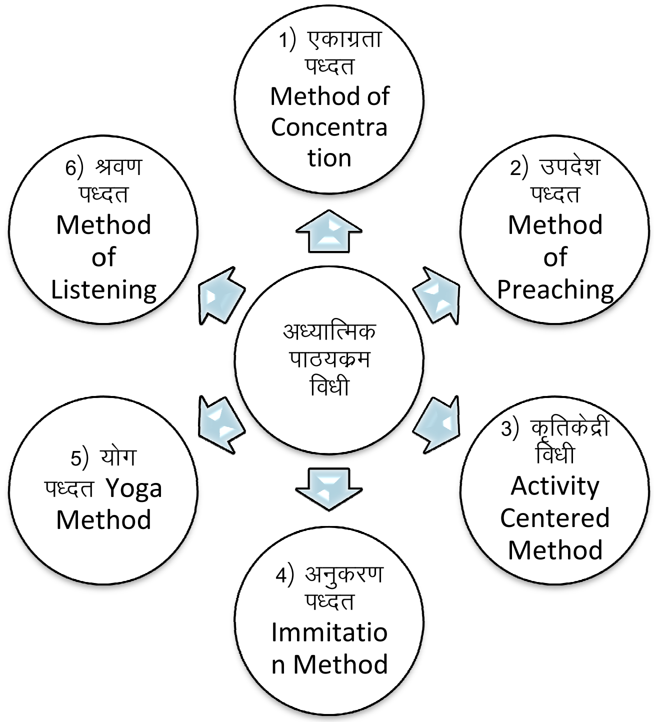

इस विवेचन के आधार से हमें शिक्षा के निम्नलिखित आकृतीबंध प्राप्त होते है.

1) व्यक्तीमत्व विकास का आकृतीबंध –

2) अध्यात्मिक विकास का आकृतीबंध –

3) व्यावहारिक विकास का आकृतीबंध –

4) समाजशिक्षा का आकृतीबंध –

5) अभिभावकोकी शिक्षा का आकृतीबंध –

1) व्यक्तीमत्व विकास आकृतीबंध

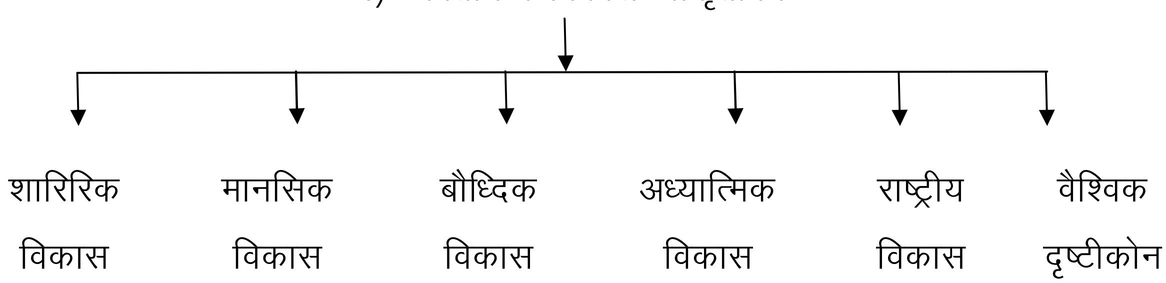

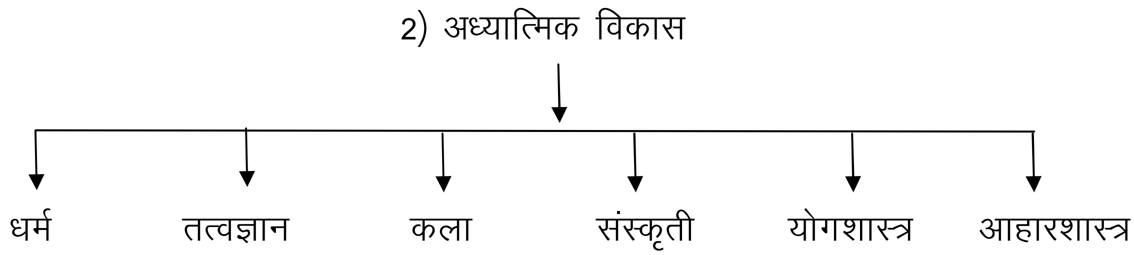

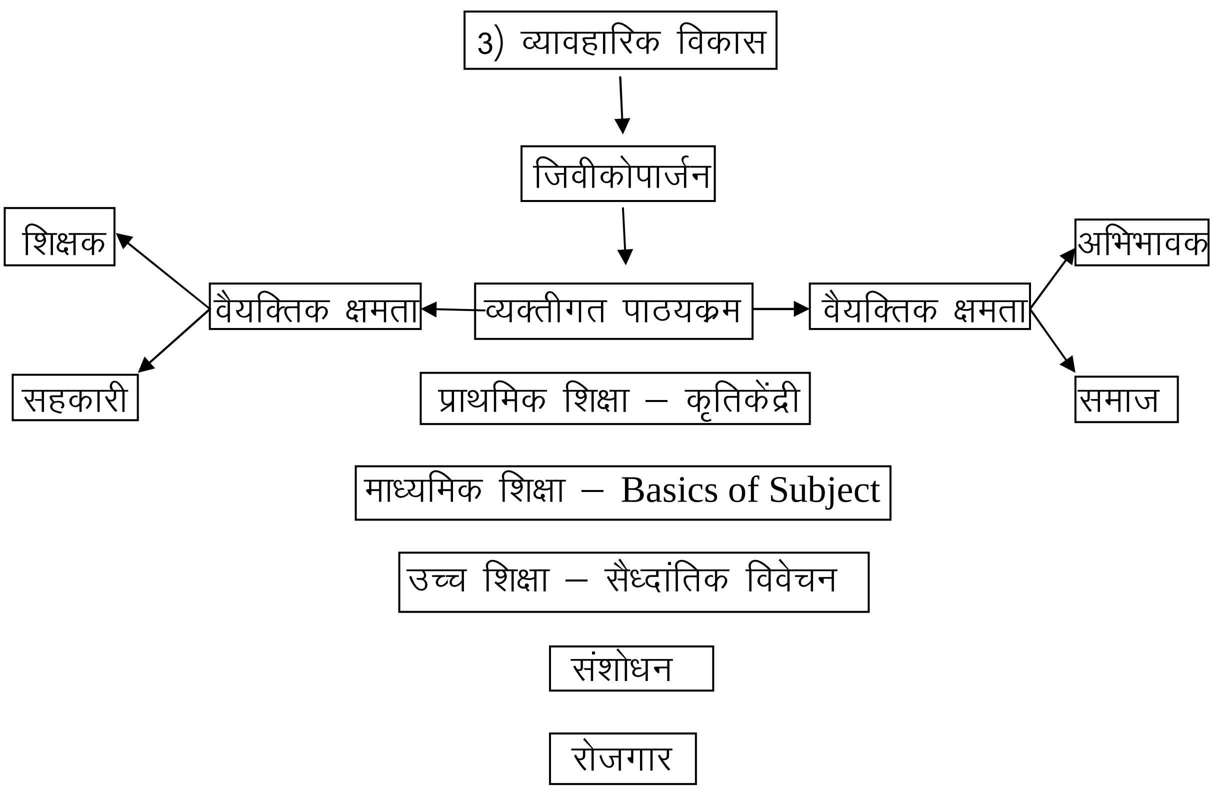

विषय :– लौकिक विषय

Groups :- Math –

Social Science – Economics, Political Science, Civics

Science – Science, Home Science – Psychology

Technology –

उद्योगशास्त्र – जिस उद्योग मे बालकों की अभिरूची है

कला – भारतीय कला शिक्षण

Culture – History, Geography, Language (राष्ट्रभाषा , संस्कृत)

Physical Education – Exercise, Yoga.

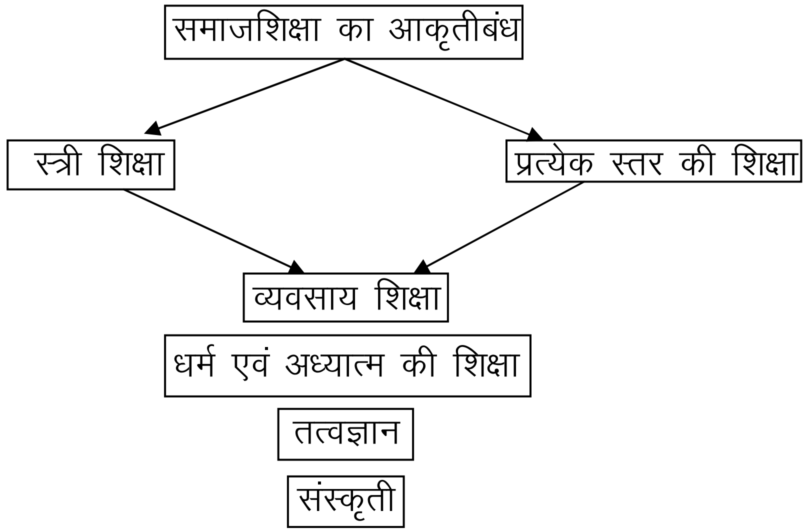

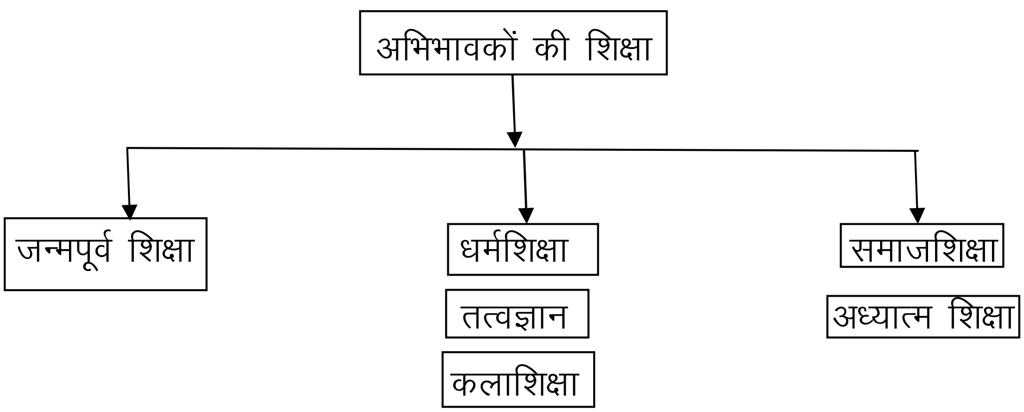

व्यक्तीगत विकास यह सभी आकृतीबंध में मूलाधार होगा.

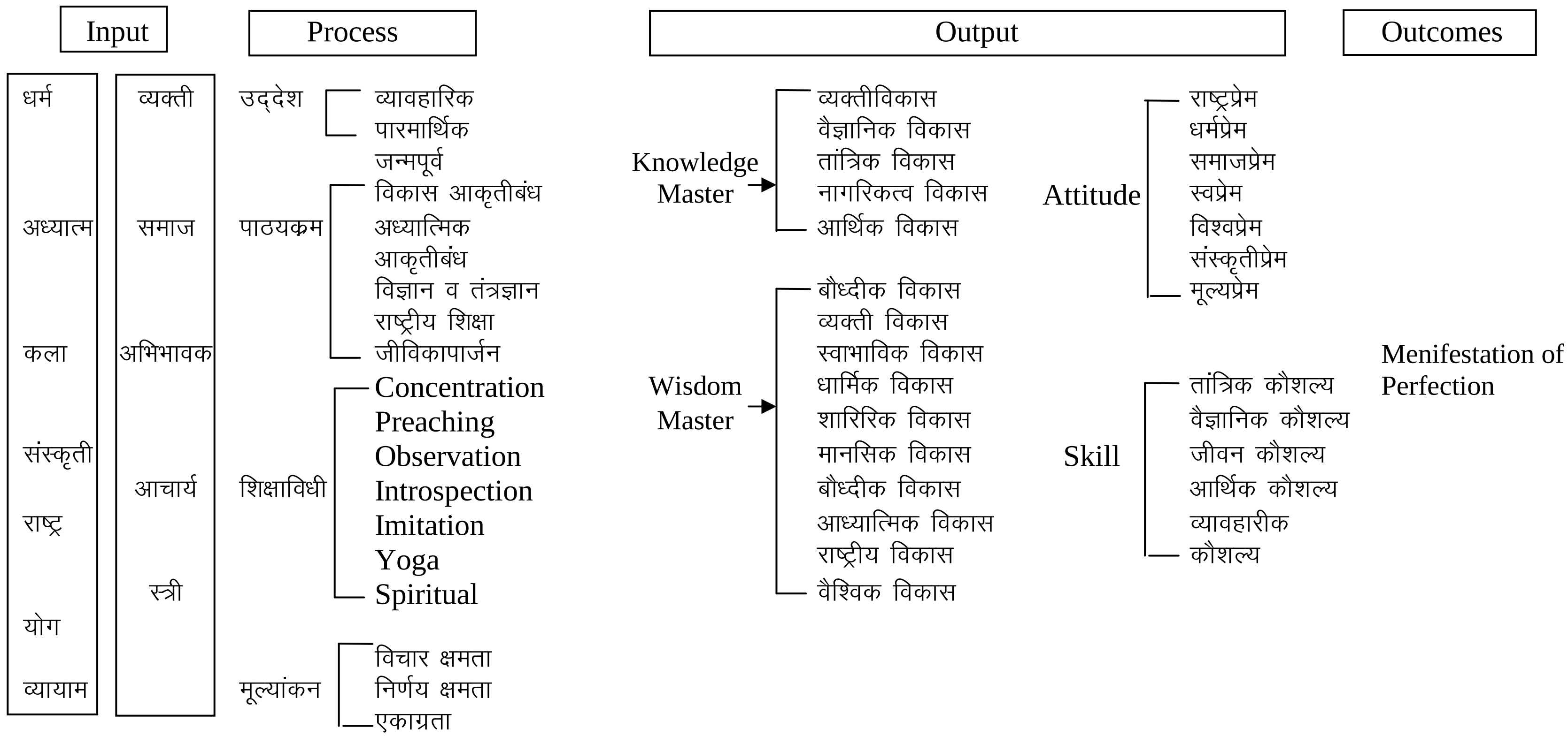
Input
Process
Output
Outcomes
धर्म
अध्यात्म
कला
संस्कृती
राष्ट्र
योग
व्यायाम
व्यक्ती
समाज
अभिभावक
आचार्य
स्त्री
उद्देश
व्यावहारिक
पारमार्थिक
पाठयक्रम
जन्मपूर्व
विकास आकृतीबंध
अध्यात्मिक
आकृतीबंध
विज्ञान व तंत्रज्ञान
राष्ट्रीय शिक्षा
जीविकापार्जन
शिक्षाविधी
Concentration
Preaching
Observation
Introspection
Imitation
Yoga
Spiritual
मूल्यांकन
विचार क्षमता
निर्णय क्षमता
एकाग्रता
Knowledge Master
व्यक्तीविकास
वैज्ञानिक विकास
तांत्रिक विकास
नागरिकत्व विकास
आर्थिक विकास
Wisdom Master
बौध्दीक विकास
व्यक्ती विकास
स्वाभाविक विकास
धार्मिक विकास
शारिरिक विकास
मानसिक विकास
बौध्दीक विकास
आध्यात्मिक विकास
राष्ट्रीय विकास
वैश्विक विकास
Attitude
राष्ट्रप्रेम
धर्मप्रेम
समाजप्रेम
स्वप्रेम
विश्वप्रेम
संस्कृतीप्रेम
मूल्यप्रेम
Skill
तांत्रिक कौशल्य
वैज्ञानिक कौशल्य
जीवन कौशल्य
आर्थिक कौशल्य
व्यावहारीक
कौशल्य
Menifestation of Perfection